ओ३म्

साम सङ्गीत सुधा

(सामवेद के १२२ मन्त्रों का पद्यानुवाद)

आवश्यक शब्द कोष सहित

अनुवादक—आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

(देवमुनि वानप्रस्थ)

वैदिक अनुसन्धान विद्वान्, भू० प्रधान सार्वदेशिक ... सभा तथा सम्पादक 'यज्ञ योग ज्योति'

...आनन्द कुटीर ज्वालापुर उ० प्र०

२००० प्रतियां
मार्ग शीर्ष संवत् २०२३
दिसम्बर १९६६

मूल्य ५० पै०

ऋग् वेद का प्रधान विषय ज्ञान, यजुर्वेद का कर्म, अथर्व वेद का विज्ञान

ओ३म्

साम संगीत सुधा

भूमिका

साम वेद का विषय—

इस पुस्तिका में सामवेद के १२२ मन्त्रों का हिन्दी पद्यानुवाद प्रस्तुत किया गया है। जब मेरी Some Psalms of the Same Veda Samhita नामक पुस्तक (जिसमें १२२ मन्त्रों का अंग्रेजी पद्यानुवाद प्रकाशित हुआ) अजन्ता प्रेस ज्वालापुर में छप रही थी तो उसके कुछ कर्मचारियों और व्यवस्थापक महोदय ने भी यह इच्छा प्रकट की कि अंग्रेज़ी से अनभिज्ञ नरनारियों के लाभ के लिये (जिन की संख्या हमारे देश में बहुत अधिक है) यदि साम वेद के मन्त्रों का ऐसा ही संग्रह हिन्दी कवितानुवाद सहित प्रकाशित हो जाये तो उसके स्वाध्याय से सर्वसाधारण को बड़ा भारी लाभ हो सकता है। पद्यानुवाद जहां भक्ति भावना को बढ़ाने की दृष्टि से अधिक उपयुक्त हो सकता है, वहां उसको स्मरण करना भी सुगम होता है अतः आप ऐसा एक संग्रह हिन्दी कविता-नुवाद सहित अवश्य तय्यार करके छपवाने की कृपा करें। अपने मित्रों और प्रेमियों की यह अभिलाषा मुझे उचित प्रतीत हुई, अतः उसकी पूर्ति के लिये यह लगभग १२० मन्त्रों का कवितानुवाद कुछ ही दिनों में तय्यार कर लिया गया और वह भारतीय स्वाध्यायशील भक्त प्रेमियों के लाभार्थ करनाल के वैदिक धर्म और संस्कृति के अत्यन्त उत्साही प्रेमी श्री चौ० प्रताप सिंह जी रईस की उदार आर्थिक सहायता से जनता के सम्मुख प्रस्तुत है।

भूमिका में इस बात का निर्देश भी आवश्यक है कि जिस प्रकार ऋग् वेद का प्रधान विषय ज्ञान, यजुर्वेद का कर्म, अथर्व वेद का विज्ञान

है, वैसे सामवेद का प्रधान विषय भक्ति वा उपासना है. साम शब्द साम-सान्त्वने इस धातु से बनता है जिसका अर्थ सान्त्वना व शान्ति देना है वेद शब्द विद् धातु से सिद्ध होता है जिस का अर्थज्ञान है। अतः सामवेद सान्त्वना वा शान्ति के उपायों को बताने वाला वेद है। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य शान्ति का अभिलाषी है और शान्ति परमेश्वर की भक्ति अथवा उपासना के बिना कभी प्राप्त नहीं हो सकती, अतः सामवेद में प्रधानतया भक्ति के सच्चे स्वरूप का प्रतिपादन है। उणादि कोष १.१४" में साम शब्द को षो- अन्तकर्मणि इस धातु से मनिन् प्रत्यय करके सिद्ध किया गया है। अन्तकर्मणि का अर्थ कई विद्वान् ज्ञान, कर्म, भक्ति इनमें से अन्तिम यह करते हैं किन्तु वैदिक धर्मोद्धारक शिरोमणि स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द जी ने उसका अर्थ स्यन्ति-खण्डयन्तिदुःखानि येन तत् (अत्र सर्वधातुभ्यो मनिन् षो-अन्तकर्मणिइतिधातोः) ऋ. १-६२-२ भाष्य इत्यादि रूप में किया है जो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है और जिससे सामवेद का महत्त्व और भी स्पष्टता से ज्ञात हो सकता है जिस के आधार पर भगवद्गीता १०, २२ में वेदानां सामवेदोऽस्मि । यह वचन पाया जाता है। महर्षिदयानन्द की उपर्युक्त व्युत्पत्ति के अनुसार साम का अर्थ दुःख विनाशक है।

सोम के अनेक आध्यात्मिक अर्थः—

सामवेद के पावमान काण्ड में देवता अथवा प्रतिपाद्य विषय पावमान सोम है। पाश्चात्य अनुवादक रेवरेण्डस्टीवन्सन, ग्रिफ़िथ आदि ने इसका अर्थ प्रायः सर्वत्र Wine, Liquor (शराब) इत्यादि कर दिया है जिससे आजकल के अंग्रेजी शिक्षित युवक भ्रम में पड़ जाते हैं।

सोम के विषय में ऋग्वेद १-९१-२२ तथा साम म.६,४ में कहा है।

त्वमिमा ओषधीः सोमविश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वंगाः ।
त्वमाततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥

अर्थात् हे सोम! तुम ने इन सब ओषधियों, जलों और सूर्य

किरण तथा गौ आदि को उत्पन्न किया है, तुमने अन्तरिक्ष का विस्तार किया और प्रकाश से अन्धकार को नष्ट किया है। ऋग्वेद ९-९६-५ तथा सामवेद मन्त्र ५२७ में कहा है कि—

सोमः पवते जनितामतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोतविष्णोः ॥

अर्थात् सोम बुद्धियों का उत्पादक है वह अग्नि, सूर्य, विद्युत्, यज्ञ, पृथिवी, आकाशादि का उत्पादक होकर सबको पवित्र कर रहा है।

ऋग्वेद ९-१-१-७ तथा सामवेद मन्त्र ५४६, १८ में कहा है—

अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद् रोदसी उभे ॥

अर्थात् यह सोम सबको पुष्टि देनेवाला, सच्चा ऐश्वर्य स्वरूप सेवनीय होकर सबको पवित्र करनेवाला है। वही सम्पूर्ण विस्तृत जगत् का स्वामी और वेद द्वारा पृथिवी और आकाश दोनों लोकों का ज्ञान देने वाला है।

ऋग्वेद ९-१०९-४ तथा सामवेद म. ४२९ में कहा है कि—

पवस्व सोम महान् समुद्रः पिता देवानां विश्वाभिधाम।

अर्थात् हे सोम तू ज्ञान शान्ति आनन्द आदि का महान् समुद्र है, तू सब सत्यनिष्ठ ज्ञानियों का पिता और सब जगह में व्यापक है। तू हमें पवित्र कर।

ऋग्वेद ९-८६-५ तथा सामवेद म. ४२९,८८८ में कहा है—

विश्वाधामानि विश्वचक्षस ऋभ्वसः प्रभोष्टे सतः परियन्ति केतवः।
व्यानशी पवसे सोम धर्मणा पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥

अर्थात् हे सोम तू सब जगह व्यापक और सर्वद्रष्टा प्रभु है। तुझ सत् स्वरूप की किरणें सर्वत्र फैली हैं। तू सारे संसार का स्वामी होकर

प्रकाशमान है और सर्वव्यापक होकर अपनी व्यापक शक्ति से सबको पवित्र कर रहा है।

क्या कोई मूर्ख से मूर्ख जंगली भी सोम नामक वनस्पति व ओषधि विशेष के विषय में ऐसी बातें करने का साहस कर सकता है कि वह सर्वव्यापक, सूर्य, अग्नि, जल, वायु, पृथिवी सबका उत्पादक, सर्वज्ञ और सारे संसार का स्वामी है ?

कभी नहीं ! अतः वेदों के अनुसार सोम प्रधानतया परमेश्वर है।

सोम—ज्ञानमय भक्ति रसवाचक—

जहां सोम शब्द प्रधानतया परमात्मवाचक है, वहां परमेश्वर के प्रति ज्ञानमय भक्ति का भी यह वाचक है यह वेदों के निष्पक्षपात अनुशीलन से स्पष्ट प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ ऋग्वेद—

९-१०८-१ तथा सामवेद म० ५७२ में कहा है—

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमोमदः। महि द्यु क्षतमोमदः ॥

यहां सोम को मधुमत्तम अर्थात् अत्यन्त माधुर्ययुक्त मस्ती उत्पन्न करने वाला कहा गया है किन्तु यह शराब की तरह प्राकृतिक मस्ती नहीं अपितु उसे आत्मा के लिये 'क्रतुवित्तम' अर्थात् ज्ञान को प्राप्त कराने वालों में श्रेष्ठ अथवा उत्तम संकल्प प्राप्त कराने वालों में श्रेष्ठ, यशस्वी बनानेवाली आध्यात्मिक मस्ती (महिद्युक्षतमो मदः) इस रूप में वर्णित किया गया है। उसे शराब इत्यादि की तरह कोई वस्तु समझ लेना बड़ी भूल है।

ऋग्वेद ९-२४-७ तथा सामवेद म. ९६७ में सोम का वर्णन इन शब्दों में है कि—

शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान्। देवावीरघशंसहा ॥

अर्थात् यह सोम न केवल स्वयं पवित्र है बल्कि दूसरों को

(पावकः) पवित्र करनेवाला (मधुमान्) माधुर्य से भरा हुआ (देवावीः) दिव्य गुणों को बढ़ाने वाला और (अघशंसहा) पापमयी भावनाओं का नाश करने वाला है।

यह स्पष्ट है कि यह वर्णन शराब जैसी किसी मादक वस्तु का नहीं किन्तु ज्ञानमय भक्ति के पवित्र और पावन आध्यात्मिक मद का है। इसी प्रकार ऋग्वेद ९-९७-३६ तथा सामवेद उत्तरार्चिक मन्त्र सं० ८६१ का सोम विषयक निम्न वर्णन भी इस विषय में अत्यधिक स्पष्ट होने के कारण उल्लेखनीय है जिसमें कहा है—

एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति।

इन्द्रमा विश बृहतामदेन वर्धया वाचं जनया पुरन्धिम्॥

इसमें सोम को सम्बोधित करते हुए कहा है कि तू हमें सब ओर से (पवस्व) पवित्र कर। तू (बृहतामदेन) बड़ी भारी मस्ती के साथ(इन्द्रम् आविश) जीवात्मा के अन्दर प्रवेश कर (वाचंवर्धय) हमारी वाणी की शक्ति को बढ़ा और (पुरंधिंजनय) हम में उत्तम बुद्धि को उत्पन्न कर। सद् बुद्धि नाशक शराब के विषय में इस प्रकार का वर्णन सर्वथा असङ्गत है। यह स्पष्टतया ज्ञानमय भक्ति भाव की आध्यात्मिक मस्ती का वर्णन है जो अत्युत्तम बुद्धि को उत्पन्न कर और वाणी आदि की शक्ति को बढ़ाकर मनुष्य को पवित्र कर देती है।

ऋग्वेद ९-१०८-३ तथा साम मन्त्र सं० ५८३ का

त्वंह्या३ङ्ग दैव्यं पवमान जनिमानिद्यु मत्तमः। अमृतत्वाय घोषयन्॥

यह सोम विषयक वर्णन भी इस प्रसङ्ग में अत्यधिक स्पष्ट होने के कारण उल्लेखनीय है जिसमें कहा है कि—

हे सोम तू (पवमान) सबको पवित्र करने वाला (द्यु मत्तम) अत्यन्त प्रकाशमान—ज्ञानसम्पन्न और मनुष्य जीवन को दिव्य बनाता हुआ अमृतत्व वा अमरता के परम आनन्द की घोषणा करता है। यह सोम

ज्ञानमय भक्ति भाव है इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं हो सकता ।

इस ज्ञान मय भक्ति रस रूप सोम का अति स्पष्ट वर्णन सामवेद ३४४ तथा ६४६ में इन स्फूर्ति दायक शब्दों में पाया जाता है—

इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् । शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ।। (साम १४४, ६४६)

इस मन्त्र का शब्दार्थ यह है कि हे (इन्द्र) जीवात्मन् (इमम्) इस (सुतम्) ध्यानादि द्वारा उत्पन्न किये गये (ज्येष्ठम्) सब से बड़े श्रेष्ठ (अमर्त्यं मदम्) । कभी न नष्ट होने वाले मद को-मस्ती को (पिब) पान कर ((शुक्रस्य) शुद्धस्वरूप परमेश्वर की (धारा) ज्ञान, शान्ति, आनन्द और पवित्रता की धाराएं (ऋतस्य सादने) सत्यस्वरूप परमात्मा के अनुभव स्थान हृदय में (त्वा अभिअक्षरन्) तेरे चारों ओर बहें ।

यहां मद के साथ ज्येष्ठ और अमर्त्य विशेषणों का प्रयोग इसको शराब आदि के हानिकारक, नश्वर और नाशकारी मद या नशे से भिन्न सूचित करने के लिये किया गया है ।

सामवेद म. १४३३ में भी इसी ज्ञानमय भक्ति रस की प्रार्थना इन स्फूर्तिदायक शब्दों में की गई है—

आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः । सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाडमर्त्यः ।। (साम १४३३)

अर्थात् (नः) हमें (ते) तेरा (मत्सरः) आनन्दित करनेवाला (वृषः) सुख शान्ति की वर्षा करने वाला (वरेण्यः) स्वीकार करने योग्य (सहावान्) सहन शक्ति देनेवाला (सानसिः) । वितरण वा अन्यों को बांटने की प्रेरणा देने वाला (पृतनाषाड्) काम क्रोध लोभ मोह आदि की सेना को परास्त करने वाला (अमर्त्यः) कभी न मरने वा नष्ट होने वाला (मदः) मद— नशा (आगन्तु) चारों ओर से प्राप्त हो ।

मद के वृषा, वरेण्यः, सहावान्, पृतनाषाट् अमर्त्यः इत्यादि विशेषणों

से यह अत्यन्त स्पष्ट है कि जिस मद या नशे की प्रार्थना की जारही है वह ज्ञान मयभक्ति रस का आध्यात्मिक मद है शराब इत्यादि का बुद्धि नाशक नश्वर परित्याज्य मद नहीं। विस्तारभय से अभी इतना ही लेख पर्याप्त है। सोमाः—सौम्यवा शान्त स्वभाव वाले भक्त—

सोम का बहुवचन में जहां प्रयोग है उस से सौम्य वा शान्त स्वभाव वाले ज्ञानी भक्तों का ग्रहण है जिन के लक्षणों का निर्देश सामवेद के म. ५४८ में इन सुन्दर शब्दों में किया गया है।

ओं सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातु वित्तमाः।
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः॥

इस का शब्दार्थ इस प्रकार है :—

(इन्दवः) चन्द्रमा की किरणों के समान सब को आह्लादित करने वाले (अस्मभ्यं गातुवित्तमाः) हमें सत्य मार्ग को प्राप्त कराने वालों में श्रेष्ठ (मित्राः) सब को प्रेम की दृष्टि से देखने वाले (स्वानाः) उत्तम जीवन व्यतीत करने वाले (अरेपसः) पापरहित (स्वाध्यः) परमेश्वर का अच्छी प्रकार ध्यान करने वाले तथा उत्तम ज्ञान सम्पन्न (स्वर्विदः) सुख का ज्ञान रख कर उसे सब को प्राप्त कराने वाले (सोमाः) शान्तस्वभाव वाले उपासक (पवन्ते) सर्वत्र गति करते और सब को पवित्र करते हैं।

सच्चे भक्तों का इस से उत्तम लक्षण का क्या हो सकता है?

ऋषि देवता छन्द स्वरादि विषयक संक्षिप्त टिप्पणी :—

मैंने 'वेदों के यथार्थ स्वरूप' नामक गुरुकुल काङ्गड़ी द्वारा प्रकाशित (मूल्य ६-५०) बृहद् ग्रन्थ में ऋषि और देवता के विषय में विस्तृत विचार किया है। जो विस्तार से जानना चाहें वे उस से जानसकते हैं। यहां तो इतना ही कथन पर्याप्त है कि ऋषि मन्त्रों के कर्ता नहीं, अपितु 'ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः' के अनुसार मन्त्रों के द्रष्टा अर्थात् उनके रहस्य को योग समाधि द्वारा जान कर प्रचार करने वाले होते हैं। इन में से अनेकों के मन्त्र प्रतिपादित विषयों के प्रचार सूचक शिवसंकल्प, श्रद्धा

इत्यादि उपनाम हैं। "या तेनोच्यते सा देवता" इत्यादि वचनानुसार मन्त्रों में प्रतिपाद्य विषय को देवता कहते हैं। छन्द प्रधानतया ७ हैं जिनके नाम गायत्री (२४ अक्षर ८ × ३) उष्णिक् २८ (७ × ४) अनुष्टुप् ३२ अक्षर (८ × ४) बृहती ३६ अक्षर (६ × ४) पंक्ति (१० × ४) त्रिष्टुप् ४४ अक्षर (११ × ४) और जगती ४८ अक्षर (१२ × ४) ये हैं इन के अनेक भेद हैं जिनका पिङ्गलमुनिकृत छन्दः सूत्र में विस्तार से निरूपण किया गया है।

सप्तस्वर—मध्यम, गान्धार, ऋषभ, षड्ज, निषाद, धैवत, और पंचम ये ७ हैं जिन्हें प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम षष्ठ और सप्तम स्वर भी कह देते हैं।

स्वर चिह्न— साम वेद संहिता में मन्त्रों पर जो १, २, ३ अङ्क हैं वे क्रम से उदात्त, स्वरित और अनुदात्त के बोधक हैं जिनके लक्षण अष्टाध्यायी के उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहारः स्वरितः" इन सूत्रों में बतायेगये हैं। इन तीन स्वरों के अतिरिक्तप्रचय और सन्नतर ये २ स्वर और हैं।

कुछ अन्य चिह्न—सामवेद संहिता के मन्त्रों पर १, २, ३ के अतिरिक्त २, क, उ अक्षर भी दिखाई देते हैं और कहीं २ ऋग्वेदीय उदात्त को भी सामवेद में २ अंङ्क से बतलाते हैं। मन्त्र के आदि और अन्तिम उदात्त को २ अङ्क से बतलाते हैं।

जहां दो उदात्त आजाते हैं, वहां प्रथम उदात्त पर १ अङ्क रहता है दूसरे पर कोई चिह्न नहीं रहता, उससे परे स्वरित पर २ र लिखा जाता है। अनुदात्त से परे स्वरित को भी २र से बतलाते हैं परन्तु वहां पूर्व के अनुदात्त पर ३ क रहता है। यदि दो उदात्त एक साथ हों उन से परे अनुदात्त हो तो प्रथम उदात्त पर २ उ चिह्न रहेगा, दूसरे उदात्त पर कोई चिह्न नहीं रहेगा। जो विस्तार से इस विषय में जानना चाहते हैं उन्हें 'नारदी शिक्षा' इत्यादि ग्रन्थों तथा साम गान विशारद विद्वानों की सहायता से सीखना चाहिये। यहां तो अति संक्षिप्त निर्देश

मात्रा कर दिया गया है। इस से अधिक विस्तार में जाना यहां सम्भवनहीं।

धन्यवाद समर्पण

हम अपने मान्य मित्र, वैदिक धर्म और भारतीय आर्य संस्कृति के अत्यन्त उत्साही प्रेमी करनाल वासी श्री चौ० प्रताप सिंह जी का हार्दिक धन्यवाद करते हैं जिन्हों ने अपने ट्रस्ट की ओर से हमारी पूर्व प्रकाशित महापुरुष कीर्तनम् तथा Some Psalms of the Sama Veda Sanhita की तरह इस पुस्तक की २००० प्रतियों के प्रकाशन का समस्त व्यय उदारतापूर्वक वहन करने की कृपा की है। हम उन के आरोग्य, दीर्घायु कीर्ति और सर्वविध सुख समृद्धि के लिये मङ्गलमय भगवान् से हार्दिक प्रार्थना करते हैं। वैदिक धर्म के प्रचार की उनकी लगन और श्रद्धा अत्यन्त अभिनन्दनीय और अनुकरणीय है। ईश्वर कृपा करे कि उस में उत्तरोत्तर वृद्धि हो।

साधारण पाठकों के लाभार्थ मन्त्रों के हिन्दी कवितानुवाद के साथ (जिस में प्रायः मन्त्रगत सब शब्दों का अर्थ आगया है) अन्त में १०० के लगभग अनूदित मन्त्रों में आये कुछ कठिन शब्दों का कोष अर्थ तथा निघण्टु धातुपाठादि निर्देश सहित दे दिया गया है जिस से विद्वान् और संस्कृत के प्रेमी सभी स्वाध्यायशील लाभ उठा कर अपने वेदार्थ विषयक ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं। यदि पाठकों का अनुरोध हुआ और प्रकाशन की उचित आर्थिक व्यवस्था हो गई, तो कभी सामवेद के समस्त मन्त्रों का हिन्दी पद्यानुवाद प्रस्तुत करने का भी यत्न किया जाएगा।

आनन्द कुटीर ज्वालापुर
२ पौष २०२३ विक्रमी संवत्
१६-१२-१९६६

धर्म देव विद्यामार्तण्ड
(देवमुनि वानप्रस्थ)

---

१२२ की संख्या में उन मन्त्रों की गणना भी सम्मिलित है जो प्रसङ्ग वश पुनः आये हैं।

ओ३म्

सम्पूर्ण सामवेद का अंग्रेजी अनुवाद

महत्त्वपूर्ण भूमिका तथा आवश्यक टिप्पणियों सहित

पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड कृत

देश विदेश के सब अंग्रेज़ी शिक्षित विद्वानों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड भू० प्रधान सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा देहली ने सम्पूर्ण सामवेद का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद (अनेक मन्त्रों का कवितात्मक) प्रमाणार्थ आवश्यक संस्कृत तथा अंग्रेज़ी टिप्पणियों सहित कर लिया है। इस का मूल्य छप जाने पर १२) होगा किन्तु जो शिवरात्रि (६ मार्च) तक इसका अग्रिम रियायती मूल्य १०) भेज देंगे उन्हें यह १०) में ही भेज दिया जायगा। वेद प्रेमी अग्रिम मूल्य १०) शीघ्र निम्न पते पर भेज कर अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करालें। पुस्तक का प्रकाशन प्रारम्भ हो चुका है।

रु० भेजने का पताः—

व्यवस्थापकः—सत्साहित्य प्रकाशन

आनन्द कुटीर ज्वालापुर उ० प्र०

ओ३म

साम संगीत सुधा

---

२ ३   १ २   ३ १ २   ३ २   ३ १ २
१   ओ३म् अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
१ २र   ३ १ २
नि होता सत्सि बर्हिषि ।।   साम० १. ६६० ।

भरद्वाजो बार्हस्पत्यऋषिः । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्दः ।

आवो देव हमारे हिय में, ज्ञान-ज्योति जगाने को
पाप ताप जो त्रिविध हमारे, उनको दूर भगाने को ।
हम जो तेरी स्तुति करते हैं, भक्ति-शक्ति का दे दो दान
दो उपदेश शुभान्तर्यामिन्, जिससे हो सबका कल्याण ।।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २   ३ २
२   ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।
३२ ३ १२ ३   १२
देवेभिर्मानुषे जने ।। साम० २. १४७४ ।

भरद्वाजो बार्हस्पत्यऋषिः । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्दः ।

तू है देव पुरोहित सबका, सर्व जगत् हितकारी है
सब यज्ञों का तू है होता, स्वार्थ-रहित उपकारी है ।
सत्य-निष्ठ जो ज्ञानी जन हैं, सबमें तुझको लखते हैं
सब मनुजों में प्राणिमात्र में, प्रेमभाव वे रखते हैं ।।

३ २ ३ १२ १२ ३ १ २
३ ओ३म् अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ साम० ३,७६० ।

मेधातिथि: काण्वऋषि: । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्द: ।

दूत रूप में वरण करें तव, तुम सर्वज्ञ दयामय देव
तुम्हें अग्रणी जो जन जानें, जननेता बनते स्वयमेव ।
जगद् रूप इस महायज्ञ के, तुम ही उत्तम कर्ता हो
ज्ञान-शक्ति सम्पन्न अपरिमित, अद्भुत जग के धर्ता हो ॥

३ २ ३ १ २ ६ १ २ ३ १ २
४ ओ३म् अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया ।
१ २ ३१ २ १
समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ साम० ४,१३९६ ।

भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषि: । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्द: ।

शुद्ध रूप वह सर्वशक्तिमय, पाप ताप सब हरता है
भक्तों को शुभ धन बल देना, सदा चाहता कर्ता है ।
रोग मोह भय शोक आवरण, सबको दूर भगाता है
सत्याचरण सहित स्तुति कर्ता, को वह पार लगाता है ।

१ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
५ ओ३म् प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।
२ ३ २ ३ १ २ १
अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ साम० ५. १२४४ ।

उशना: काव्यऋषि: । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्द: ।

प्रियतम अतिथि-तुल्य तुम स्वामी
तुम हो प्यारे मित्र समान।
सर्वोत्तम तुम ही नेता हो
करूं तुम्हारा गुण-गण गान।
रथ समान उद्देश्य हमारे
तक तुम ही ले जाते हो।
सदा जानने योग्य तुम्हीं हो
ध्रुव सुख प्राप्त कराते हो॥

१ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
६ ओ३म् आ ते वत्सो मनोयमत् परमाच्चित् सधस्थात्।
२ ३ १ २ ३ २
अग्ने त्वां कामये गिरा॥ साम० ८. ११६६।

वत्सः काण्वऋषि.। अग्निर्देवता। गायत्रीछन्दः।

मैं हूं तेरा प्यारा बच्चा, तेरे मन को खैंचूंगा
तू है मुझसे बहुत बड़ा पर, तेरी महिमा सोचूंगा।
मैं तेरी ही प्रभो ज्ञानमय, सदा कामना करता हूं
वाणी से तव कीर्तन करता, मन से चिन्तन करता हूं॥

३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
७ ओ३म् दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्।
१ २ ३ २
यजिष्ठमृंजसे गिरा॥ साम० १२।

वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्रीछन्दः।

जो परमेश्वर सुख का प्रापक, दुःख-शोक का नाशक है
जो सर्वज्ञ पूजनीय है, दुष्टों का सन्तापक है।
दूत समान वेद के द्वारा, जो पहुंचाता सच्चा ज्ञान
अपनी वाणी से मैं करता, उस ही अमरदेव का गान ॥

१२ ३१ २३ १ २ ३ २ ३ २
८ ओ३म् उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
नमो भरन्त एमसि ॥ साम० १४

आयुङ्क्ष्वाहिः ऋषिः । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्दः ।

हे सर्वोत्तम नेता तेरी, ओर रातदिन आते हैं
शुद्ध-बुद्धि अरु शुद्ध कर्म की, भेंट हाथ में लाते हैं।
ज्ञान हमें हो प्राप्त तथा आनन्द यही अभिलाषा है
तुम से ही पूरी हो सकती, नहीं अन्य से आशा है ॥

३ १ २ ३ १ २ १ ३ १२ ३ २१
९ ओ३म् अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः ।
३ १ २ ३ १ २
अग्निमिन्धे विवस्वभिः ॥ साम० १९ ।

आयुंक्ष्वाहिः ऋषिः । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्दः ।

अग्नि जलाता जब हाथों से, यज्ञ-वेदि में है यजमान
मन के साथ मिलावे मति को, श्रद्धापूर्वक एक समान।
ज्ञानकिरण के साथ आत्म की, करे अग्नि को वह भासित
जो अज्ञान तिमिर को सारे, करे तेज से नित नाशित ॥

२ ३ २ ३ १२ ३ १२ ३१२
१० ओ३म् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
३१ २१ ३ १२
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ साम० ३१ ।

प्रस्कण्व ऋषिः । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्दः ।

सूर्य चन्द्र गिरि सागर तरु सब, उसकी याद दिलाते हैं
जो सर्वज्ञ सभी में व्यापक, उस तक बुध ले जाते हैं।
ये सब झण्डे बनकर हरि को, ही दिनरात दिखाते हैं
जो ज्योतिर्मय तम का नाशक, उसका स्मरण कराते हैं॥

३ २ ३ १ २ १ ३ २ १ ३ २
११ ओ३म् कविमग्निमुपस्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे ।
३ १ २ ३ १ २
देवममीवचातनम् ॥ साम० ३२ ।

मेधातिथिः ऋषिः । अग्निर्देवता । गायत्रीछन्दः ।

जो परमेश्वर रोगनिवारक, उसकी स्तुति तुम सदा करो।
सृष्टि-यज्ञ में सत्य-नियमयुत, सुख-दायक नित चित्त धरो॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
१२ ओ३म् यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे ।
१ २ ३र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥

शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिः । अग्निर्देवता । बृहतीछन्दः ।

यज्ञ यज्ञ में प्रति वाणी से, मैं करता उसका गुणगान।
सर्व-व्यापक जो अविनाशी, बलशाली प्रिय मित्र समान॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१३ ओ३म् अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः।
२ ३ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २ ३ १ २
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः॥

सौभरिः काण्वऋषिः। अग्निर्देवता। बृहतीछन्दः।

करता हूं मैं उसके दर्शन, जो सर्वज्ञ दयामय है
जिसको कर्म समर्पित करके, जन बन जाता निर्भय है।
धार्मिक जन को सदा बढ़ाता, जो सर्वोत्तम नायक है
स्तोत्र हमारे उसको पहुंचें, प्रभु जो न्याय विधायक है॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २
१४ ओ३म् सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अपां नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्तिमनेहसम्॥
साम० ६१।

विश्वामित्र ऋषिः। अग्निर्देवता। बृहतीछन्दः।

मर्त्य मित्र हम तेरे बन कर, अमर देव का वरण करें
नित रक्षा हित शुभकर्मा का, दोष रहित का स्मरण करें।
जो है कर्म फलों का दाता, भय को दूर भगाता है
भव सागर से पार लगाता, सर्व सुखों का दाता है॥

३२उ ३ १ २ ३ १ २ १२ ३१२ ३ १ २
१५ ओ३म् इमंस्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव संमहेमा मनीषया।
३२३ ३ १२ ३१२र ३१ २र ३ १२र
भद्रा हि नःप्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥
साम० ६६

कुत्स आङ्गिरस ऋषिः। अग्निर्देवता। जगती छन्दः।

स्तोत्र हमारा रथ समान यह, इसे भेजते प्रभु के पास,
पूजनीय जो सर्वव्यापक, बुद्धि भेजते उस के पास।
इस की उपासना से मति यह, तीव्र शुद्ध नित बन जावे
नहीं मित्रता में तव ईश्वर, प्रजा क्लेश को फिर पावे॥

३२३ ३ २ ३ १ २र ३२ ३१२
१६ ओ३म् बृहद्द् वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये।
२ ३ २ २र ३ ३२ ३ २
यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः॥ साम०८९

पूरुरात्रेयऋषिः। अग्निर्देवता। अनुष्टुप् छन्दः।

ज्योतिर्मय जो देव उसी को, उत्तम जीवित अर्पित कर।
ज्ञानी जिसको अपने सन्मुख, रखते मित्र मान हितकर॥

१२ ३१ २३१ २२
१७ ओं यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्।
३ १ ३ १ २ ३ १ २
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ साम० १११

सोभरिः। काण्व ऋषिः। अग्निदवता। उष्णिक् छन्दः

पूजनीयतम देव तुम्हीं को, पूज्य रूप में वरते हैं
तुम देवों के देव अमर हो, तव उपासना करते हैं।
सृष्टि यज्ञ यह जो अति सुन्दर, इसके तुम शुभ कर्ता हो
सुख के दाता न्याय विधाता, तुम ही जग के धर्ता हो॥

३ १ २ ३ २३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१८ ओ३म् इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् ।
१ २ ३ १ २
अनाभयिन् ररिमा ते ।। साम० १२४. ६३ ।।

मेधातिथिः काण्व ऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्रीछन्दः ।

शुभ गुण में वासिन् जीवात्मन्, कर ले भक्तिरसामृत पान।
निर्भय, तुझको रस देते हैं, पूर्ण उदर भर कर ले पान।।

३ १ २ ३ २ ३ १ २र
१९ ओ३म् वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्रनोनुमो वृषन् ।
३ २ २ २
विद्धि त्वास्य नो वसो ।। साम० १३२ ।

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्रीछन्दः ।

सुख के वर्षक तुझे चाहते, करते तेरी स्तुति चहुं ओर ।
तू भी देव चित्त की जाने, हम पर फेर सुकरुणा कोर।।

२ २३ ३१ २र ३ २ ३१२ ३१२
२० ओ३म् अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह ।
३ १ २र
अहं सूर्य इवाजनि । साम० १५२. १५०० ।

वत्सः काण्वऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्रीछन्दः ।

सत्य रूप ईश्वर की मैंने, है मेधा को ग्रहण किया
उसने करुणा कर के मुझ को, सूर्य तुल्य है बना दिया ।
यही चाहता अब मैं सारे, अन्धकार को दूर करूं
प्रखर ज्ञान की किरणों से मैं, जग को आलोकित कर दूं।।

१ २ ३ २३ १ २ ३ १ २र २ २
२१ ओ३म् सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।

३ २ ३ १ २
सनिं मेधामयासिषम् ॥ साम० १८१ ।

मेधातिथिः काण्वऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ।

जो जगत् का नाथ अद्भुत, जीव का प्रिय है महान् ।

मांगता हूं मैं सुनिर्मल, बुद्धि को कर दे प्रदान ॥

१ २ ३ १ २र
२२ ओ३म् न कि देवा इनीमसि न क्यायोपयामसि ।

३ १ २
मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥ साम० १७६ ।

गाधा ऋषिका । इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ।

नहीं किसी की हिंसा करते, नहीं प्रलोभन देते हैं ।

मन्त्रों में जो शुभ विधान है, हम उस पर चल देते हैं ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
२३ ओ३म् आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः ।

२उ ३ १ २
न त्वामिन्द्रातिरिच्यते ॥ साम० १९७. १६६० ।

श्रुतकक्ष ऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ।

जैसे नदियां सागर अन्दर, जाकर हो जाती हैं लीन

वैसे चन्द्र समान भक्त-जन, तुझ में रमें सलिल में मीन ॥

तेरा ही प्रभु हो विचार इक, अन्य विचार न कोई हो ।

हों समाधि में मग्न उपासक, क्लेश लेश नहिं कोई हो ॥

१ २ ३ २ ३ १ ३ २ ३ १ २१
२४ ओ३म् इन्द्रो अंग महद्भयमभीषदप चुच्यवत् ।
२उ ३ २र
स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥ साम० २०० ।

गृत्समदः शौनक ऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ।

जो बड़े से भी बड़ा भय, दूर हरि उसको करे ।
एक रस सर्वत्र है प्रभु, पाप ताप वही हरे ॥

१ २ ३ १ २र ३ २र
२५ ओ३म् न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन् ।
२ ३२उ ३ २
न क्येवं यथा त्वम् ॥ साम० २०३ ।

वामदेव ऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ।

पापाज्ञाननिवारक ईश्वर, तुझसे उच्च न कोई है
नहीं सूक्ष्म है कारण तुझसे, बड़ा न जग में कोई है ।
नहीं लोक में तेरे जैसा, कोई भी हो सकता है
अनुपम तू तेरी महिमा का, कौन पार पा सकता है ?

३ १२ ३ १ २ ३ १ २
२६ ओ३म् बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये ।
१ २ ३ २ ३ १ २
साधः कृण्वन्तमवसे ॥ सा० २१७ ।

मेधातिथिः ऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ।

जिसकी महिमा अति विशाल है, और भुजाएं चारों ओर
सदा भला ही जो करता है, रक्षा कर विपदों से घोर ।
सर्व व्यापक उस जगदीश्वर, की करते हम नित्य पुकार
उन्नति साधक ज्ञानशक्ति को, देकर करता वह उपकार ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२७ ओ३म् वयं घा ते अपि ष्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः ।

१ २
त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥ साम० २३० ।

मेधातिथिः काण्व ऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ।

वाणी द्वारा पूजनीय तू, सदा देव हम तेरे हैं
तेरे स्तोता भक्त उपासक, हम तो सेवक तेरे हैं।
ज्ञानभक्तिरसरूप सोम का, तू करता परमेश्वर पान
हमें तृप्त करदे परमोत्तम, शान्ति सुधा का करवा पान ॥

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
२८ ओ३म् त्वमङ्ग प्रशंसिषो देवः शविष्ठमर्त्यम् ।
२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥
साम० २४७. १७२३ ।

गौतम ऋषिः । इन्द्रो देवता । बृहतीछन्दः ।

हे प्रिय सर्व शक्तिमय तू ही, जनको वन्द्य बनाता है
देव न तुझको छोड़ अन्य जो, सुखदाता कहलाता है।
हे परमेश्वर सच्चे दिल से, यही बात मैं कहता हूं
तेरी आज्ञा का पालन कर, क्लेश हर्ष से सहता हूं ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २
२९ ओ३म् इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
शिक्षाणो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥

साम० २५९. १४५६ ।

वशिष्ठ ऋषिः । इन्द्रो देवता । बृहतीछन्दः ।

हमें ज्ञान दो तुम परमेश्वर, पिता पुत्र को ज्यों देता ।
शिक्षा दो संयम की जिससे, जीव ज्योति को पा लेता ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २
३० ओ३म् मा न इन्द्र परावृणग् भवा नः सधमाद्ये ।
१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परावृणक् ॥

साम० २६० ।

भर्गः प्रागाथ ऋषिः । इन्द्रो देवता । बृहतीछन्दः ।

त्याग कभी न करो भक्तों का, नहिं हे प्रभु जी त्याग करो
वास हमारे शुद्ध हृदय में, करो कभी न त्याग करो ।
तुम हो रक्षक इन्द्र हमारे, हो तुम ही ईश्वर प्राप्तव्य ।
त्याग हमारा कभी न करना, एकमात्र तुम हो ध्यातव्य ॥

१ २ ३ २र ३ १ २ ३ १ २
३१ ओ३म् मा चिदन्यद् विशंसत सखायो मा रिषण्यत ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥

साम० २४२. १३६० ।

प्रगाथो घौरः काण्व ऋषिः । इन्द्रो देवता । बृहतीछन्दः ।

और किसी की स्तुति न करो तुम, परमेश्वर गुणगान करो
जो आनन्द शान्ति का वर्षक, उसका मित्रो ध्यान करो।
अन्यों की स्तुति करके प्यारो, कभी न दुःख उठाओ तुम
मन्त्रों से सुख-वर्षक को स्मर, सुख आनन्द बढ़ाओ तुम॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३२ ओ३म् बरामहां असि सूर्य बडादित्य महाँ असि।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँअसि॥
साम० २७६. १७२।

जमदग्निर्भार्गव ऋषिः। सूर्योदेवता। बृहती छन्दः।

सूर्यों का भी सूर्य दयामय, तू है सचमुच देव महान
तू अविनाशी है तेजोमय, तू है सचमुच परम महान्।
सत्स्वरूप तू नित्य एक रस, जिसमें होता नहीं विकार
स्तोतव्यों में श्रेष्ठ देव तू, तेरी महिमा का नहिं पार॥

३१ २ ३ १ २ ३ १ २ २उ ३ १ २ ३ १ २
३३ ओ३म् शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानि॥
साम० ३२९।

विश्वामित्रो गाथिन ऋषिः। इन्द्रो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः।

सुख दायक जो परमेश्वर है, जो सर्वोत्तम नायक है
बाह्य आन्तरिक संग्रामों में, जो पवित्र संचालक है।

रक्षा के हित जो पुकार को, सुनता है शुभशक्ति निधान।
हम पुकारते पाप विनाशक, धन जेता का दिव्य-विधान॥
(शुनमितिसुखनाम निघ० ३.६)

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ २३ १ २
३४ ओ३म् त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
३ २३ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः॥
साम० ३३३॥

भरद्वाज ऋषिः। इन्द्रो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः।

जो है रक्षक सुख का दाता, जो भक्तों की सुने पुकार
पाप-ताप संहारक जो हरि, आर्तों का करता उद्धार।
उसे पुकारें सर्व-शक्तिमय, जो सब भक्तों को प्रिय है
भक्ति भेंट को स्वीकृत करके, करे मुदित जो यह हिय है॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ १ ३ १ २
३५ ओ३म् इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्।
३ १ २ ३क २ र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने॥
साम० ३४४. ८४८।

गोतमो राहूगण ऋषिः। इन्द्रो देवता। अनुष्टुप् छन्दः।

सबसे बड़ी अमर जो मस्ती, उसका आत्मन् कर तू पान
जो कि उतरती कभी नहीं है, जो कि मिलाती शान्ति निधान।
शुद्धदेव की ज्ञानशक्ति की पवित्रता की धाराएं
चारों ओर बहें तब हिय में, आनन्दामृत धाराएं॥

१२३ १ २ ३ १२ ३ १२
३६. ओ३म् अर्चत प्रार्चत नरः प्रियमेधासो अर्चत ।
१२ ३ २ ३२३ ३ २ ३क २र
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्णवर्चत ॥ साम० ३६२ ।

प्रियमेध आङ्गिरस ऋषिः । इन्द्रो देवता । अनुष्टुप् छन्द. ।

पूजा करो करो तुम पूजा, उसकी जो सर्वज्ञ महान्
शुद्ध बुद्धि जिनको प्यारी है, करो उसी का गुणगणगान ।
पुत्र तुम्हारे भी पूजें नित, उसको जो अनुपम भगवान
जो सब विपदाओं को हरता, है अभेद्य दृढ़ दुर्ग समान ॥

२ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २
३७ ओ३म् विभोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो ।
१ २ ३१ २
अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र मंहय॥ साम० ३६६,

अत्रिर्भौम ऋषिः । इन्द्रो देवता । अनुष्टुप् छन्दः ।

सर्व व्यापक तेरे जग में, हैं अनन्त शुभ धन के दान ।
हे सर्वज्ञ बढ़ाओ निशिदिन, सुधन हमारा शम दम ज्ञान ॥

३२३ २ ३ १२३ १२ ३२र ३ १
३८ ओ३म् समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद्
२र ३ १२ २ ३ १ २र ३ १ २२ १
भूरतिथिर्जनानाम् । स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषन् तं
२३१ २र ३ ३ २३ २
वर्तनीरनु वावृत एक इत् ॥ साम० ३७२ ।

वामदेवो गोतम ऋषिः । इन्द्रो देवता । जगती छन्दः ।

आवो मिल जावो सब भाई, मिल कर उसका गान करो
जो है एक सभी में व्यापक, उस महान का ध्यान करो ॥
वह प्रकाशपति पूर्ण सनातन, नये जगत् में बसता है
उसी एक की ओर मार्ग यह, नाना विध ले चलता है ॥

३ १२ ३३३१ २ ३ २ ३ २ १२
३९. ओ३म् इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि
२उ ३१ २ ३ २३ १२ ३ १ २३२३
प्रभूवसो । न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत् क्षोणीरिव
२२ ३ १ २
प्रति तद्धर्य नो वचः ॥ साम० ३७३ ।

सव्य आङ्गिरस ऋषिः । इन्द्रो देवता । जगती छन्दः ।

ये हम तेरे प्रभु तेरे हैं, देव तुम्हारे चेरे हैं ।
तेरा पावन नाम सदा ले, हम कर्मों को घेरे हैं ॥
तुझे छोड़ कर के इस जग में, कोइ न सुनत हमारी है ।
तेरे ही आगे अब हमने, अपनी झोली पसारी है ॥
पृथिवी करती सब चीज़ों को, जैसे यह आकर्षित है ।
वैसे करो प्रार्थना स्वीकृत, लगा तुम्हारे में चित है ॥

१ २ ३ १२ ३१२ ३ १२ ३ २ ३ १ २
४० ओ३म् अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वयु॑वः सध्रीचीर्विश्वा
३ १ २ १२ ३ १२३ २ ३ २३२ ३ २ ३ २
उशतीरनूषत । परिष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं
३१ ३१२
मघवानमूतये ॥ साम० २७५ ।

विश्वामित्र ऋषिः । इन्द्रो देवता । जगती छन्दः ।

सुख मिश्रित मेरी सब मतियां, जाती हैं ईश्वर की ओर
उसे चाहतीं मिलकर जातीं, पकड़ें वे उस की ही छोर।
प्रियसतियां अपने पतियों का, जैसे करतीं आलिङ्गन
निज रक्षा हित परमनाथ का, वे करतीं नित आलिङ्गन ॥

१२ ३१ २र ३ १ २ ३ २
४१. ओ३म् तमु अभि प्रगायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् ।
१२ ३ १ २ ३ १ २र
इन्द्रं गीर्भिस्तविषमाविवासत ॥ साम० ३८२ ।

गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ऋषी । इन्द्रो देवता । उष्णिक् छन्दः ।

उसका गान करो चहुं दिश तुम, जिस की करते सभी पुकार
सब जिसकी स्तुति करते हैं बुध, जिस की स्तुति का कहीं न पार।
उस महान् परमेश्वर का तुम, करो वाणियों से कीर्तन
मन वाणी से शुद्ध कर्म से, करो सदा प्रभु का पूजन ॥

२ ३ २ ३ १२३ १ २ ३ २ ३ १ २
४२ ओ३म् एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यंनरम् ।
३ १ २ २ ३२उ ३ २
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥ साम० ३८७ ।

विश्वमना ऋषिः । इन्द्रो देवता । उष्णिक् छन्दः ।

आओ मित्रो मिलकर उसका, करें स्तवन जो स्तुति के योग्य।
एक सभी में जो व्यापक है, कोइ न जिसके तुलना योग्य।

१ २ ३ १२ ३ १२ ३२ ३२
४३ ओ३म् इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् !
३ १२ ३ १२ ३ १ २
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ साम० ३८८,३०२५ ।

नृमेध आङ्गिरस ऋषिः । इन्द्रो देवता । उष्णिक् छन्दः ।

करो गान उस परमेश्वर का, जो सुख पूरक परम महान्।
है प्रशस्य सर्वज्ञ दयामय, वही वेद का देता ज्ञान॥

१ २ ३ १ २३२ ३२ ३ २ ३
४४ ओ३म् पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां
२ ३ १ २र
विश्वाभिधाम॥ साम० ४२९,१२४१।

त्रसदस्युर्ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। द्विपदा विराट् छन्दः।

शान्ति मूल तू सुख का सागर देवों का तू पिता महान्।
सर्व व्यापक तू कर दे प्रभु, हम में पवित्रता आधान॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३
४५ ओ३म् विश्वतो दावन् विश्वतो न आभर यं त्वा
शविष्ठमीमहे। साम० ४३७।

त्रसदस्युर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। द्विपदा विराट् छन्दः।

सभी ओर से देने वाले, हम को तू पूरा भर दे।
सर्वशक्तिमय तुझ से मांगें, हमें ज्ञान बल से भर दे॥

३ २ ३२३ ३ २ ३ २ ३ १२ ३२ ३२
४६ ओ३म् एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे॥
साम० ४३८, २७६८।

सब ऋतुओं में पूजनीय यह, परमेश्वर अत्यन्त महान्
वेदों में यह अति विश्रुत है, इसका मैं करता गुणगान॥

४७ ओ३म् सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः।
साम० ४४२,।

त्रसदस्युर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। द्विपदा विराट् छन्दः।

सब का धारण करने वाली, गौवें रहतीं सदा पवित्र।
ज्ञानी जन भी पवित्र रहते, पाप रहित हो कर सुचरित्र॥

२३ २ ३ १२ ३ २ ३२ ३ १ २ ३क२र
४८ ओ३म् अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः॥
यामः ४४८, ११०७।

बन्धु ऋषिः। अग्निर्देवता। द्विपदा विराट् छन्दः।

निकटतम तू देव रक्षक, अग्रणी तू है महान्
नाथ मङ्गलमय दया कर, हम करें तेरा ही ध्यान॥

२ ३ १ २
४९ ओ३म् इन्द्रो विश्वस्य राजति॥ साम० ४५६।

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ऋषिः। इन्द्रो देवता। द्विपदा विराट् छन्दः।

परमेश्वर है सबका राजा, सारे जग में सदा विराजा॥

१ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २
५० ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया।
इन्द्राय पातवे सुतः॥ साम० ४६८, ६८९।

मधुच्छन्दा ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। गायत्री छन्दः।

शान्ति मूल हे सोम दयामय, स्वादिष्ठा धारा का पान।
हमें करा आनन्दित कर दे, जो उपजावे मोद महान्॥
इस धारा से करदे प्रमुदित, जो करती आत्मिक कल्याण।
ज्ञान युक्त इस भक्ति सुधा को, पी हो परम शान्ति का भान॥

२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २

५१ ओ३म् वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे ।

पवमान स्वर्दृशम् ॥ साम० ४८०,७८४ ।

भृगुर्वारुणि: ऋषि:। पवमान: सोमोदेवता । गायत्री छन्द: ।

तू निश्चय से सुख का वर्षक, तू करता सबको सुपवित्र ।
सौख्य मार्ग के दर्शक तुझको, सदा पुकारें बन सुचरित्र ॥
अति तेजोमय सूर्य आदि के, अन्दर तू है चमक रहा ।
ज्ञान ज्योति दे योगिजनों के, हृदयों में तू दमक रहा ॥

१ २ ३ २ ३ १२ ३२ ३ १ २२३२

५२ ओ३म् अचिक्रदद् वृषाहरिर्महान् मित्रो न दर्शत: ।

सं सूर्येण दिद्युते ॥ साम० ४९७,१०४९ ।

मेधातिथि: ऋषि: । पवमान: सोमो देवता । गायत्री छन्द: ।

मुझको हर्षित करता है नित, सुख का वर्षक परमेश्वर ।
महान् सूर्य सम दर्शनीय वह, चमके रवि अन्दर सुखकर ॥

१ २ ३ १२ १ २ ३ १ २

५३ ओ३म् सोमा: पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमा: ।

३२ ३ १ २३१२ ३क२र ३ १ २

मित्रा: स्वाना अरेपस: स्वाध्य: स्वर्विद: ॥

साम० ५४८,११०१ ।

मनु: सांवरण ऋषि: । पवमान: सोमो देवता । अनुष्टुप्छन्द: ।

सौम्य उपासक गति करते वे, पवित्र सबको करते हैं।
धर्म मार्ग के ज्ञाताओं में, श्रेष्ठ सदा गति करते हैं ॥

सब के मित्र श्रेष्ठ जीवनयुत, पाप रहित वे होते हैं।
उत्तन ध्यानी श्रेष्ठ कर्मरत, सुख के प्रापक होते हैं॥

३१२३१२ ३१ २र ३ २
५४ ओ३म् पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि

३ १ २ १२ ३२३ ३१ २ ३ २ ३ १ २र३
विश्वतः। अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते श्रृतास इद् वहन्तः
१ २ र
सं तदाशत॥ साम० ५६५,८७५।

पवित्र आङ्गिरस ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगती छन्दः।

प्रभु तेरा सामर्थ्य जगत् में, सभी जगह पर विस्तृत है।
वह पवित्र है उससे युत तू, सब अङ्गों में भी स्थित है॥
जिसने तनमन नहीं तपाये, वह कच्चा नर क्या जाने?
उस सुखबल को जिसे तपस्वी, धर आनन्द सदा माने।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ २ ३ २ २१
५५ ओ३म् सखाय आनिषीदत पुनानाय प्रगायत। शिशुं न यज्ञैः
२र ३२
परिभूषत श्रिये॥ साम० ५६८,११५७।

पर्वत नारदौ ऋषीः। पवमानः सोमो देवता। उष्णिक छन्दः

आवो मित्रो बैठो चारों, ओर ईश के गुण गावो।
जो है सबका पावन उसके, परम प्रेम से गुण गावो॥
जैसे प्रसन्न करते शिशु को, मिष्टान्नादिक दे कर के।
अपनी शोभा के हित उसको, करो मुदित अध्वर कर के॥

[अध्वर-हिंसा रहित यज्ञ)

२उ २ २ ३ १ २ ३ २३ १ २ ३१२
५६ ओ३म् य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे।

१२३ १२ ३ १ २ ३२
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अंग ।। साम० ३८९,१३४१ ।

गोतमो राहूगण ऋषिः। इन्द्रो देवता। उष्णिक् छन्दः।

आत्म समर्पण करने वाले, को सब धन का करता दान।
जो ईश्वर वह सदा एक उस, के बल का नहिं होता हान।

२ ३ २ ३ १२ ३ १र २उ३२ ३ १ २ ३ १२
५७ ओ३म् इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधिक्षमा विश्वरूपंयदस्य।

१२ ३२३ १२३ २उ ३१२ ३ २
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राधउपस्तुतं चिदर्वाक् ।।

साम० ५८७।

वसिष्ठा मैत्रावरुणिः ऋषिः। इन्द्रो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः।

स्थावर जंगम जो कुछ जग में, सबका राजा ईश्वर है।
सच्चे दिल से स्तुति कर्ताओं, का पालक परमेश्वर है।।
आत्म समर्पण जो करते हैं, जो दानी नर होते हैं।
उनको विविध धनों को देता, वे पा प्रमुदित होते हैं।।

३१ २र ३२उ३२
५८ ओ३म् इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम् ।। साम० ५९१।

वामदेवो गौतम ऋषिः। विश्वे देवा देवता। एकपाज्जगती छन्दः।

मुझे बना दे प्रभु सुख वर्षक, पाप ताप का एक विनाशक।।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३२३ १२र
५९ ओ३म् मयि वर्चो अथोयशोऽथोयज्ञस्य यत्पयः ।
३ २ ३ १ २ ३१ २र
परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु ॥ साम० ६०२ ।

वामदेवो गौतम ऋषिः । प्रजापतिर्देवता । अनुष्टुप् छन्दः ।

मुझ में तेज कीर्ति हो मेरी, मुझ में हो यज्ञों का सार ।
नभ में रवि के तुल्य परात्मा, स्थिर रक्खें मुझ में सुविचार ॥

२ ३ १ २र ३ ७ ३ २ ३ १ ३ २
६० ओ३म् त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं
१ १ २र ३ २ १ २३ १ २र३ १ २र
गाः । त्वमाततनोरुर्वा ३न्तरिक्षं त्वंज्योतिषा वि तमो ववर्थ॥
साम० ६०४ ।

गोतमो राहूगण ऋषिः । सोमो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः ।

तू करता निर्माण औषधी, तू करता जल का निर्माण ।
गौवों को तू पैदा करता, ज्ञान किरण करता निर्माण ॥

प्रभु विशाल इस अन्तरिक्ष का, तू ही करता है विस्तार ।
दे तू ज्योति छिन्न करता है, जग में अन्धकार अधिकार ॥

३ १ २र ३१ २र
६१ ओ३म् वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः ।
३ १ २र ३१२ ३ १ २र३ १ २र
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः ॥ ६१६ ।

वामदेवो गौतम ऋषिः । अग्निर्देवता । पक्तिश्छन्दः ।

है वसन्त रमणीय ग्रीष्म भी, ठीक समय पर आता है।
वर्षा शिशिर शरद् ऋतु सब में, न्यारा ही रस आता है॥
सब ही रचना मंगलमय की, सुखदायक हो जाती है।
सारी ऋतुओं की सब शोभा, उसका गुणगण गाती है॥

३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ २ ३ १२ ३२
६२ ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २२ ३ १ २
आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥
साम० ६२६।

कुत्स आङ्गिरस ऋषिः। सूर्यो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः।

देवों का अद्भुत बल दाता, हृदय में प्रकट हुआ है आज।
अग्नि सूर्य चन्द्रादि सभी का, ज्योति विधाता वह अधिराज॥
पृथ्वी में वह अन्तरिक्ष, आकाश सभी में व्यापक है।
वह है सूर्य चराचर आत्मा, अर्पित उसे उपासक है॥

१ २ ३२उ ३ २ ३ २ ३ २३१२
६३ अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः।
१२ ३२ ३ २ ३ २
अग्मन्नृतस्य योनिमा॥ साम० ६५९।

शतं वैखानसा ऋषयः। पवमानः सोमो देवता। गायत्री छन्दः।

गाय दुधारू गोशाला की, नदियां सागर की ज्यों ओर।
वैसे शान्त उपासक जाएं, सत्य मूल ईश्वर की ओर॥

१ २ ३२ १२ ३२
६४ ओ३म् पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः ।
३ १ २र
सखित्वमावृणीमहे ॥ साम० ७८७ ।

अमहीयुराङ्गिरस ऋषिः । पवमानः सोमो देवता । गायत्री छन्दः ।

हे सब के पावन परमेश्वर, तव सखित्व का वरण करें
शुद्ध हृदय को सरस बनाने, वाले को हम ग्रहण करें ॥

१ २ ३१२ ३१२ ३ १२ ३ १ २
६५. ओ३म् ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया ।
१२
तेभिर्नः सोम मृडय ॥ साम० ७८८,

अमहीयुराङ्गिरस ऋषिः । पवमानः सोमो देवता । गायत्री छन्दः ।

ज्ञान शान्ति की तव धाराएं, शुद्ध हृदय में बहती हैं ।
उनसे सोम सुखी कर हम को, जो सुमोद की बहती हैं ॥

३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
६६. ओ३म् यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा ।
३ १ ३२
देवावीरघशंसहा ॥ साम० ८१५ ।

अमहीयुराङ्गिरस ऋषिः। पवमानः सोमो देवता । गायत्री छन्दः।

मद वरणीय सोम जो तेरा, सकल पाप का नाशक है ।
उस से पवित्र करदे हम को, जो दिव्यत्व विकासक है ॥

३१ २ ३ २ ३ १२
६७ ओ३म् सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।

२ ३ १ २र ३ १२ ३ १२
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ।। साम० ८२८ ।

जेता माधुच्छन्दस ऋषिः। इन्द्रो देवता । अनुष्टुप् छन्दः ।

नहीं मित्रता में ज्ञानी बन, इन्द्र कभी भयभीत रहें।
सब के जेता अपराजित हम, तेरे प्रति सुविनीत रहें ।।

१२ ३ २ ३ २३ १ २ ३ २
६८ ओ३म् पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः ।
२उ ३१
वि वारमव्यमर्षति।। साम० ८९० ।

बृहन्मतिराङ्गिरस ऋषिः। पवमानः सोमो देवता । गायत्री छन्दः।

हे सब के पावन परमेश्वर, तेरा रस मदकारक है।
वह है मस्ती को उपजाता, क्लेश-लेश-संहारक है।

१२ ३ २ ३ २३ १२ ३२
६९ ओ३म् पवमानस्य ते रसो दक्षो विराजति द्युमान् ।
२ ३ २ ३क २र ३२
ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे ।। साम० ८९१ ।

बृहन्मतिराङ्गिरस ऋषिः। पवमानः सोमो देवता । गायत्री छन्दः ।

तेरा रस है बल का वर्धक, चमक रहा वह है द्युतिमान् ।
ईश्वर पवित्रता के कारक, सब को दरशाता भगवान् ।।

२ ३ २ ३ २३ २क १२ ३ १२
७० ओम् सना ज्योतिः सना स्वा३र्विश्वा च सोम सौभगा ।
१ २ ३ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ।। साम० १९४८ ।

मधुच्छन्दा ऋषिः । पवमानः सोमो देवता । गायत्री छन्दः।

हमें ज्योति दे सुख दे हमको, सब प्रकार का दे सौभाग्य।
हमको श्रेष्ठ बनादे ऐसा, चमका देवें अपना भाग्य॥

२ ३ १२३२उ ३१२ ३ १ २
७१ ओ३म् सना दक्षमुत ऋतुमप सोम मृधो जहि।
१२ ३ १२
अथा नो वस्यसस्कृधि॥ साम० १०४९।

मधुच्छन्द:ऋषि:। पवमान: सोमो देवता। गायत्री छन्द:।

हमें शक्ति दे ज्ञान हमें दे, ईश शत्रुओं का कर नाश।
हमको श्रेष्ठ बना दे शंकर, कर दे शुभ दिव्यत्व विकाश॥

२ २ ३ १२ ३२ ३ १२
७२ ओ३म् तं व: सखायो मदाय पुनानमभिगायत।
शिशुं न हव्यै: स्वदयन्त गूर्तिभि:॥ साम १०९८।

मधुच्छन्दा ऋषि:। पवमान: सोमो देवता। अनुष्टुप् छन्द:।

मित्रो! पवित्रता के कारक, सोम देव का गान करो।
मस्ती पाने के हित शंकर, का तुम मनमें मान करो॥
मिष्टान्नादिक दे कर शिशु को, ज्यों प्रसन्न तुम करते हो।
करो उद्यमों से प्रसन्न प्रभु, को जिस से तुम डरते हो॥

२ ३ २३ २३ २ ३ १ २ ३ १२
७३ ओ३म् तव क्रत्वा तवोतिभिज्योक् पश्येम सूर्यम्।
१२ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि॥ साम० १०५२।

मधुछन्दा ऋषि:। पवमान: सोमो देवता। गायत्री छन्द:।

तेरे दिये ज्ञान रक्षण में, चिर तक दर्शन रवि का हो।
हमको श्रेष्ठ बना दे शंकर, दर्शन तुझ कविवर का हो॥

१ २र ३ १ २३ २ ३ १ २ ३ १ ३
७४ ओ त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।

अथा ते सुम्नमीमहे। साम० ११७०।

नृमेध आङ्गिरस ऋषि: इन्द्रो देवता। पुर उष्णिक् छन्द:।

सर्वाधार हमारे तुम ही पिता तथा तुम माता हो।
सुख की तुम से करें प्रार्थना, तुम ही सर्वविधाता हो॥

३ २ ३ १ २३२उ ३ १ २ ३ १ २
७५ ओ३म् दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे।
३ ३ ३ १ २
सुनोता मधुमत्तमम्॥ सामत् ११२७।

उचथ्य आङ्गिरस ऋषि:। सोम: पवमानो देवता। गायत्री छन्द:।

मधुरतम तुम सोम रस का, भक्त जन कर लो सवन।
ज्ञान का रस भक्ति मिश्रित, पी करो प्रभु का स्तवन॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २र
७६. ओ३म् इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमैरनूषत।
३२३ १२ ३१२ ३२ ३ २ ३ १२
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः॥ १२५२,

जेता माधुच्छन्दस ऋषि:। इन्द्रो देवता। अनुष्टुप् छन्द:।

मन्त्रों से तुम सरल भाव से, ईश्वर का कर लो गुणगान।
दान हज़ारों जिस के जग में, इन से भी हैं अधिक महान॥

३ १ २ ३२ ३ १ २र ३२
७७ ओ३म् पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम् ।
२ ३ १ २ ३२ ३२ ३ १ २
कामान्त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥ १३०१ ।

पवित्र आङ्गिरस ऋषिः । पवमानः सोमो देवता । गायत्री छन्दः ।

पवमानेश्वरदत्त ऋचाएं, धारण करें लोक परलोक
ज्ञानिजनों से प्रस्तुत होकर, दूर भगावें सारा शोक ।
ये हैं देवी दिव्य गुणों को, अन्दर ये उपजाती हैं ।
सभी कामना पूर्ण करें वे, जो देवों को भाती हैं ॥

१२ ३२ ३ १ २ ३ १२ ३२३ १२
७८ ओ३म् येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा ।
१२ ३ १ २ ३ १ २
तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः ॥ साम० १३०२

पवित्र आङ्गिरसो ऋषिः। पवमानः सोमो देवता । अनुष्टुप् छन्दः ।

जिस पवित्र ईश्वर के चिन्तन, से करते ज्ञानी सुपवित्र ।
अपने आत्मा को सुविनिर्मल, ऐसे बन जाते सुचरित्र ॥
उस पवमान सर्वधारक की, ये प्रदत्त सब वेद ऋचाएं ।
हमें पवित्र करें सुमनोहर, शान्तिकारिणी वेद ऋचाएं ॥

१ २ ३१२ ३ १ २र
७९ ओ३म् त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः ।
३ १ २ ३ १ २ ३१ २
विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि ॥ साम० १०२६ ।

नृमेध आङ्गिरस ऋषिः । इन्द्रो देवता । उष्णिक् छन्दः ।

तू परमेश्वर सबसे ऊपर, तू ने सूर्य किया द्युतिमान्।
जगदुत्पादक सर्व विभासक, जगन्नाथ तू सर्व महान्॥

३ १ ३ ३ १ २र ३ १२
८० ओ३म् उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये।
३२ ३१ २ ३२
आरे अस्मे च शृण्वते॥ साम० १३७६।

गोतमो राहूगण ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः।

चलते हुए देव के पथ पर, शुद्ध मन्त्र उच्चार करें।
जो पुकार सुनता उस ईश्वर, का हम नित सुविचार करें॥

१२ ३२उ ३ २३ १२
८१ ओ३म् आ नस्तेगन्तुमत्सरो वृषा मदो वरेण्यः।
३१२ ३ १ २ ३ १ २र
सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाडमर्त्यः॥ साम० १४

अगस्त्यो मैत्रावरुण ऋषिः। इन्द्रो देवता। अनुष्टुप् छन्दः।

मस्ती छा जावे वह हम में, जो सुख की वर्षा करती।
जो वरेण्य है श्रेष्ठ हमें जो, निशिदिन आनन्दित करती॥
सहन शक्ति जो हम में लाती, वितरण में प्रेरित करती।
कामादिक रिपुवर्ग विनाशक, कभी नहीं जो है मरती॥

३२उ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १
८२ ओ३म् इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद्
२ ३ १ ३ २ ३ २ ३२उ ३ १२ ३२
धनजिदुच्यते बृहत् । विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश
३ १ २ ३२३ २३ १२
उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ।। साम० १४५५ ।

विभ्राट् सौर्य ऋषिः । सूर्यो देवता । जगती छन्दः ।

ज्योतियों में ज्योति यह है, श्रेष्ठ सर्वोत्तम कही
विश्वजेता धनविजेता, जग प्रकाशक है यही ।
देखने में सूर्यसम यह, पाप का करती प्रदाह ।
सहन शक्ति सदा बढ़ाती, प्रबल आत्मिक बल प्रवाह ।।

१२ ३१ २र३ १ २ ३१२
८३ ओ३म् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
२ ३ १ २ ३ १ २
धियो यो नः प्रचोदयात् ।। साम० १४६२ ।

सर्व रक्षक ईश का हम, ध्यान करते सर्वदा ।
प्राण रूप वही जगत् का, दुःखनाशक है सदा ।।
सब जगह में व्याप्त है, सर्वज्ञ वह भगवान है ।
पूर्ण जो आनन्दमय है, दिव्य जिसकी शान है ।।
विश्व का कर्त्ता सनातन, शान्ति सुख दाता वही ।
शोक पातक की विनाशक, जिसकी है महिमा कही ।।

श्रेष्ठ उसके तेज का, चिन्तन करें दिन रात हम।
बुद्धियों को हम सबों की, शुद्ध करदे वह परम॥
प्रेरणा उसकी मिले, तब सर्व कर्म विशुद्ध हों।
दिव्य जीवन युक्त होकर, हम सदा उद्बुद्ध हों॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८४ ओ३म् अद्याद्या श्वः श्व इन्द्र त्रास्व परे च नः।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
विश्वा च नो जरितृन् सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः॥
साम० १४५८।

कविर्भार्गव ऋषिः। इन्द्रो देवता। विषमा बृहती छन्दः।

आज आज तू कल भी प्रति दिन, ईश हमारी रक्षा कर।
हम सब की जो भक्त तुम्हारे, प्रभो रात दिन रक्षा कर॥

१२ ३ २ ३ १ २३ २ ३ १ २ ३ २
८५ ओ३म् अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत्।
१ २ ३२ग ३ १२
बोधा स्तोत्रे वयो दधत्॥ साम० १५३१।

केतुराग्नेय ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः।

ज्ञान दाता तू प्रजा का, प्रियतमेश्वर श्रेष्ठ है।
भक्त को दीर्घायु देता, बोध दे तू प्रेष्ठ है॥

२ ३ १ २र ३१ २ ३ २ ३ ३२
८६ ओ३म् त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः।
२३ १ २ ३ १२
सखा सखिभ्य ईड्यः॥ साम० १५३६॥

विश्वामित्र ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः।

तू है बन्धु हमारा अग्ने (नायक), तू है प्यारा मित्र।
मित्रों द्वारा पूजनीय तू, तेरा ध्यान करें सुचरित्र ॥

१२ ३१ २३ १ २ ३ १२
ओ३म् वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि ।
२ ३ १२ ३२
अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥ साम० १५४० ।

विश्वामित्र ऋषिः । अग्निर्देवता । गायत्री छन्दः ।

तू सुख वर्षक तुझे जलाते, भीतर सुख वर्षक बन कर।
तू प्रकाशमय पूजन करते, तेरा हम भासित बन कर॥

१२ ३२३१२ ३ २ ३ १२ ३२
८८ ओ३म् उप नः सूनवो गिरः शृणवन्त्वमृतस्य ये ।
३ १ २
सुमृडीका भवन्तु नः ॥ साम० १५९५ ।

अनानत ऋषिः । पवमानः सोमो देवता । गायत्री छन्दः ।

पुत्र हमारे सुनें अमर के, वचन भक्त वे धन्य बनें।
वे हों, हमें सदा सुखदायक, वेदज्ञों में गण्य बनें॥

१ २ ३ १ २ ३१२ ३ १ २र
८९ ओ३म् मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव ।
३२३ १ २ ३ १ २ २१ २र ३२३१२
महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥ १६०५ ।

देवातिथिः काण्व ऋषिः । इन्द्रो देवता । विषमा बृहती छन्दः ।

तुझ तेजस्वी की सखिता में, कभी न हम होवें भयभीत।
थकें न हम कामों को करते, बनी रहे तव करुणा मीत॥

तेरी रचना दर्शनीय है, सुखवर्षक ! उसको देखें।
सब को ही पुरुषार्थी उन्नत, बना सुखी हम नित देखें॥

२३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १२
९० ओ३म् तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः ।
२उ ३ १२
त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे ॥ साम० १६४६ ।

नृमेध आङ्गिरस ऋषिः । इन्द्रो देवता । उष्णिक् छन्दः ।

है द्युलोक तव महिमा गाता, पृथिवी महिमा गाती है।
नदियां सागर सब यश गाते, गिरिराजी यश गाती है॥

३२ ३ २ ३ १२ ३१२
९१ ओ३म् सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी ॥ साम० १६५४ ।

शुनः शेप ऋषिः । इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ।

सच्चा भक्त वही जो ज्ञानी, शमदम श्रद्धा पूर्ण धनी।
परमेश्वर में रमण करे जो, जिसके अनुयायी सुगुणी॥

२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ २
९२ ओ३म् विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
१ २ ३ २ ३ १२
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ साम० १६७१ ।

विश्वामित्र ऋषिः । विष्णुर्देवता । गायत्री छन्दः ।

ईश्वर के कर्मों को देखो, जो सब जग में व्यापक है।
जीवात्मा का योग्य मित्र है, वही व्रतों का ज्ञापक है॥

१ २र ३१ २र ३१२

९३ ओ३म् तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।

३ २३ २ ३ १ २

दिवीव चक्षुराततम् ।। साम० १६७२ ।

विश्वामित्र ऋषिः । विष्णुर्देवता । गायत्री छन्दः ।

सर्वव्यापक परमेश्वर का, जो स्वरूप सब का ज्ञातव्य ।
सदा देखते ज्ञानी जन हैं, उसे क्यों कि सुख है प्राप्तव्य ।।
उसे देखते वे हैं ऐसे, जैसे नर रवि को देखें ।
नभ में विस्तृत रवि देखें जन, ज्ञानी हरि भीतर देखें ।।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३

९४ ओ३म् तद्विप्रासो विपन्युवो जागृवांसः समिन्धते ।

२ ३ १ २२२२२

विष्णोर्यत् परमंपदम् । साम० १६७३

विश्वामित्र ऋषिः । विष्णुर्देवता । गायत्री छन्दः ।

सर्व व्यापक परमेश्वर का, जो पद परम सदा प्राप्तव्य ।
उसे प्राप्त करते ज्ञानी जन, जिन का चिन्तन भद्र सुभव्य ।।
जिन में रहती भक्ति भावना, जो कर्तव्य परायण हैं ।
जागरूक कर्तव्य कर्म में, पर उपकार परायण हैं ।।

३२३ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २३१

९५ ओ३म् इदंश्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो

२ ३ २ २ ३ १२ ३२ ३२३२३

अजनिष्ट विभ्वा । यथा प्रसूता सवितुः सवायैवा
रात्र्युषसे योनिमारैक् ।। साम० १७४९ ।

कुत्स आङ्गिरस ऋषिः । इन्द्रो देवता ! त्रिष्टुप् छन्दः ।

ज्योतिः स्रोत देव सर्वोत्तम, मेरे सम्मुख प्रकट हुआ।
सर्वव्यापक साथ उसी के ज्ञान महाद्भुत प्रकट हुआ॥
अन्धकार की रात्रि उषा में, जैसे परिणत होती है।
ज्ञान उषा भी ज्ञान सूर्य में, वैसे परिणत होती है॥

१ २३ १ २ ३ १ २ ३१ ३१ २
९६ ओ३म् बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि।
३२ ३ १ २ ३क२र ३ १ २ ३२उ ३ १ २
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम्॥
साम० १७८९।

जमदग्निर्भार्गव ऋषिः। सूर्यो देवता। विषमा बृहती छन्दः।

निज महिमा से दिव्य सूर्य तू, अति महान् है अति महान् है।
सचमुच देव परम अद्भुत तू, तू देवों का परम प्राण है॥

१२ ३ २ ३ १ २३ १२
९७ ओ३म् पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः॥ १९१०।
जमदग्निर्भार्गव ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। नित्यपदा गायत्री छन्दः।

परम मधुर तू ज्ञान भक्तिरस, सोमामृत कहलाता है।
आत्मा को तू मस्त बनाता, पावन करता जाता है॥

१ २३ १२ ३२ ३ १ २ २ २ ३२
९८ ओ३म् वात आवातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे।
२ ३ १२
प्र न आयूंषि तारिषत्॥ साम० १८४०।

उलो वातायन ऋषिः। वायुर्देवता। गायत्री छन्दः।

प्राणरूप परमेश्वर हमको, सुखद भक्ति औषध का पान।
सदा करावे हिय शमकारक, दीर्घ आयु का दे वह दान॥

३१ २   ३ १ २   ३२उ   ३२ ३   १२
९९ ओ३म् उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा ।
१ २ ३ १ २
स नो जीवातवे कृधि ॥ साम० १८४१ ।

उलो वातायन ऋषिः । वायुर्देवता । गायत्री छन्दः ।

हे प्राणों के प्राण दयामय, पिता हमारा तू भ्राता ।
तू ही मित्र पवित्र सुजीवन, में समर्थ कर तू त्राता ॥

२ ३१ २   ३२ २३   १२३   १२
१०० ओ३म् यददो वात ते गृहेऽमृतं निहितं गुहा ।
१२   ३१२
तस्य नो धेहि जीवसे ॥ साम० १८४२ ।
३१ २र   ३१ २ ३ १

ग्रहण योग्य तेरे स्वरूप में, हृदय गुहा जो अमृत भरा ।
प्राणरूप उसको तू धारण, हम भक्तों को नित्य करा ॥
(अमृतम्-ज्ञान, भक्ति आनन्द रूप अमृत)

१०१ ओ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
३ १ २र ३ १२ ३२३क२र   ३१ २३ १२ र
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः १८७४ ।

गोतमो राहूगण ऋषिः । विश्वे देवा देवता । त्रिष्टुप् छन्दः ।

ज्ञानिजनो हम निज कर्णों से, शुभ शब्दों का करें श्रवण,
अपने नेत्रों से शुभ दृश्यों, का ही करें सुअवलोकन ।
दृढ अङ्गों से प्रभु की करते, स्तुति हम बड़ी उमर पावें
पूज्यो ! जो सब की हितकारक, ऐसी दीर्घ आयु पावें ॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१०२ ओ३म् ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्निं सुम्नाय
३ १ २र १ २ ३१२ ३२उ १२
दधिरे पुरोजनाः । श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं
१ २ ३२
मानुषा युगा ॥ साम० १८७४ ।

अवत्सारः कश्यप ऋषिः । विश्वे देवा देवता । उपरिष्टाज्ज्योतिश्छन्दः ।

सत्य रूप जो अति महान है, जो प्रभु सब का है द्रष्टव्य
उस को बुधजन आगे रखते, सच्चा सुख जिन को प्राप्तव्य ।
जिस के कान सदा सुनते हैं, भक्त जनों की आर्त पुकार
सर्वव्यापक देवेश्वर का, पति पत्नी मिल करें विचार ॥
(सुम्नम् —सुख निघ ३.६)

१ २ ३२३१२३१२
१०३ ओ३म् शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये ।
२उ ३१ २
शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ साम० ३३

व्याप्त है सर्वत्र जो वह, दिव्य माता शान्ति दे
कामनाएं पूर्ण करती, शुद्ध जो वह कान्ति दे ।
इष्ट सुख की प्राप्ति के हित, शान्ति दायक हो हमें
भक्ति रस के पान के हित, वह सहायक हो हमें ।
शान्ति सुख की वृष्टि होवे, सब जगह कल्याण हो
रोग पातक दूर होवें, दिव्य जननी ध्यान हो ॥

शत (१००) कल्प दुर्बोध वैदिक शब्द कोष:

साम संगीत सुधा

पृष्ठ	वैदिक शब्द	अर्थ	निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश
१	अग्ने	हे ज्ञान स्वरूप परमेश्वर	अग्नि: कस्मात् अग्रणीर्भवति निरुक्ते अगि-गतौ गतिके ३ अर्थ ज्ञान, गमन, प्राप्ति अग्निर्ब्रह्म (शत. ३.२.२.७)
,,	वीतये	ज्ञान प्रकाश करने तथा पाप ताप के नाश के लिये	वी—गति व्याप्ति प्रजन-कान्त्यसनखादनेषु
,,	गृणान:	स्तुति किया जाता हुआ तथा उपदेश देता हुआ	गृ —स्तुतौ गॄ —शब्दे
,,	हव्यदातये	ग्रहण करने योग्य भक्ति शक्ति आदि के दान के लिये	हु —दानादनयो: आदाने च
,,	होता	ज्ञानादि का दाता	,, ,,
,,	बर्हिषि	हृदय रूप अन्तरिक्ष में वा आसन पर	बर्हिरिति अन्तरिक्षनाम निघ. १.३ बृह-बृद्धौ बृंहति-वर्धते उपासकोऽनेनेतिर्बर्हि:-पवित्रहृदयम्
,,	यज्ञानाम्	देवपूजा, संगतिकरण, दान इत्यादि शुभ कार्यों के	यज-देवपूजा संगतिकरणदानेषु यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म (शतपथे १.७.१.५)
,,	देवेभि:	सत्यनिष्ठ ज्ञानियों के द्वारा	देवो दानाद वा दीपनाद् वाद्योतनाद् वा.सेऽस्मयाऽदेवा:। (कौषी, २.८)विद्वांसो हि देवा: ।। (शत० ३.७.३.१०)

पृष्ठ	वैदिक शब्द	अर्थ	निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश
,,	विश्ववेदसम्	सर्वज्ञ	विद्—ज्ञाने विश्ववेत्तीति तम्
,,	सुक्रतुम्	उत्तम कर्ता, उत्तम ज्ञान और कर्म सम्पन्न	कृञ्—करणे क्रतुरिति प्रज्ञा नाम (निघ. ३.९) क्रतुरिति कम नाम (निघ. २ १)
२	वृत्राणि	पाप तथा अज्ञानादि आवरण	पाप्मावै वृत्रः (शत. ११.१.५.७) यदवृणोत् तद् वृत्रस्य वृत्रत्वम्
,,	विपन्यया	विशेष स्तुति द्वारा	पन—स्तुतौ व्यवहारे च
,,	प्रेष्ठः	प्रिय तम	
४	दोषावस्तः	दिन रात	दोषेति रात्रि नाम (निघ.१.७) वस्तोरिति अहर्नाम (निघ.१.९)
,,	धिया	बुद्धि और कर्म से	धीरिति प्रज्ञानाम (निघ. ३.९) धीरिति कर्मनाम (निघ. २.१)
,,	ववस्वभिः	ज्ञान किरणों से अथवा ज्ञानी मनुष्यों द्वारा	विवस्वन्तः इति मनुष्यनाम (निघ. २.३)
५	केतवः	झण्डे और ज्ञानी	कित-संज्ञाने काश० धा०
,,	जातवेदसम्	सर्वव्यापक और सर्वज्ञ को	जाते जाते विद्यतइति वा जातानिवेद इति वा निरुक्ते
,,	अध्वरे	हिंसारहित यज्ञ में	अध्वरइति यज्ञनाम (निघ. ३.१७) ध्वरतिर्हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः- निरुक्ते २.७

पृष्ठ	वैदिक शब्द	अर्थ	निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश
,,	अमीवचातनम्	रोगनाशक	अमीवा-रोग अम-रोगे
,,	गातुवित्तम:	पृथिवी आदि लोकों को जानने वालों में श्रेष्ठ	गातु:इति पृथिवी नाम (निघ. १.१) विद्-ज्ञाने
,,	आर्यस्य	श्रेष्ठ पुरुष के	आर्य:— ईश्वर पुत्र: निरु. अर्य इति ईश्वरनाम(निघ.२.२२)
,,	ऊतये	रक्षा के लिये	अव-रक्षणे
,,	सुदंससम्	उत्तम कर्म करने वाले को	दंस इति कर्म नाम (निघ.२.१)
,,	नक्षन्तु	व्याप्त वा प्राप्त करें	नक्षतिर्गतिकर्मा (निघ. २.१४) नक्षतिर्व्याप्तिकर्मा (निघ.२.१८)
,,	अनेहसम्	क्रोध तथा त्रुटि रहित	एह इति क्रोध नाम (निघ.२.१३)
,, ७	अन्ध:	भक्ति रूप अन्न को	अन्ध इति अन्ननाम (निघ.२.७) आख्यातव्यम्
,,	मनीषया	शुद्ध बुद्धि के साथ	मनीषीति मेधाविनाम निघ ३.१५
,, ७	संमहेम	पूजा करें	मह-पूजायाम्
,, ६	सनिम्	सत्य असत्य का विभाजन करने वाली	षण-संभाक्तौ
,, ६	इनीमसि	हिंसा करते हैं	मीञ्-हिंसायाम्
,,	आयोपयामसि	विमोहित करते वा प्रलोभन देते हैं	युप-विमोहने
,,	इन्दव:	चन्द्र किरणों के समान शान्त स्वभाव वाले	उन्दी -क्लेदने

पृष्ठ वैदिक शब्द	अर्थ	निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश
,, १० इन्द्र:	परमेश्वर	इदि-परमैश्वर्ये
,, १० विचर्षणि:	विशेष रूप से देखने वाला सर्वज्ञ	चर्षणि:पश्यति कर्मा निघण्टु ३.११
,, ११ शविष्ठ	सर्वशक्ति युक्त	शवइतिबल नाम (निघ.) २.६
,, ११ मर्डिता	सुखदाता	मृड-सुखने
,, १२ यामनि	संयम के योग मार्ग में	यमु-उपरमे
,, १२ सधमाद्ये	ब्रह्म के साथ आनन्द लाभ के स्थान हृदय में	मदी-हर्षे, तृप्तियोगे
,, १२ रिषण्यत	दु:ख उठाओ, हिंसा करो	रिष—हिंसायाम्
,, १३ बट्	सचमुच	बट्इतिसत्यनाम निघ ३.१०
,, १४ शुक्रस्य	पवित्रस्वरूप(परमेश्वर) के	शुचिर्-पूतीभावे
,, ,, ऋतस्यसादने	सत्य स्वरूप परमेश्वर के वासस्थान हृदय में	ऋतम् इतिसत्यनाम ३.१०
,, १५ राधस:	भौतिकवा आध्यात्मिक धन का	राध-संसिद्धौ राधइति धननाम निघ. २.१०
,, ,, द्युम्नम्	धनं यशो वा	द्युम्नम्-धननाम२.१०
,, ,, वर्तनी:	मार्ग	वृतु-वर्तने
,, ,, क्षोणी:	पृथिवी	क्षोणीति पृथिवी नाम निघ१.१

पृष्ठ वैदिक शब्द	अर्थ	निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश
,, हर्य	चाह कर	हर्य—गति प्रेप्सयो:
,, जनय:	स्त्रियाँ	जनी-प्रादुर्भावे
,, १७ तविषम्	महान्	तविष इति महन्नाम निघ.३.३
,, ,, कृष्टी:	मनुष्यों को	कृष्ट्य इति मनुष्यनाम निघ२.३
,, ,, आविवासत	सेवा या पूजन करो	विवासति:-परिचरण कर्मा निघ. ३.५
,, ,, विपश्चिते	मेधावीविद्वान् के लिये	विपश्चित् इति मेधाविनाम निघ. ३.१५
,, १८ अरेपस:	पापरहित	
,, १६ अन्तम:	समीपतम	अन्तमानाम् अन्तिक (समीप)नाम २.१६
,, ,, सोम	१संसार का उत्पादक शान्ति का स्रोत परमेश्वर २ज्ञानमयभक्तिरस	षूङ्—प्राणि गर्भ विमोचने
,, २० अचिक्रदत्	प्रसन्न करता है	क्रद्-आल्हादे काश० धा०
,, ,, स्वाना:	उत्तम जीवन वाले	अन—प्राणने
,, ,, स्वाध्य:	उत्तम बुद्धि और कर्मवाले। उत्तम रीति से ध्यान करने वाले	ध्यै-चिन्तायाम्
,, २१ आम: शृतास:	कच्चा-तपोहीन (तप की अग्नि से तपे हुए, पक्के	

पृष्ठ वैदिक शब्द	अर्थ	निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश
,, २२ विदयते	विशेष रूप से देता है, दया करता है	दय-दान गति रक्षण हिंसाऽऽदानेषु
,, ,, अप्रतिष्कुतः	किसी से न दबने वाला (सर्व शक्तिमान् ईश्वर)	कु-शब्दे
,, ,, चर्षणीनाम्	मनुष्यों का	चर्षणयइति मनुष्यनाम निघ.२.३
,, २३ रन्त्यः	रमणीय-मनोहर	रमु-क्रीडायाम्
,, ,, अनीकम्	बल, प्राण	अन-प्राणने
,, २४ योनिम्	गृह वा मूल को	योनिरिति गृह नाम निघ. ३४
,, ,, अस्तम्:	गृह-घर	अस्तम्इतिगृहनाम निघ.३.४
,, २५ ऊर्मयः	लहरें	
,, २६ नोनुमः	बार २ स्तुति करते हैं	नु-स्तुतौ
,, ,, वाजिनः	ज्ञानी-बलशाली	वज-गतौ ज्ञानगमनप्राप्ति
,, ,, अदुच्छुनः	दुःख रहित वा दुःखनाशक	शुनमिति सुखनाम निघ.६.६ दुच्छुनम्-दुःखम्
,, ,, दक्षः	बल वर्धक	दक्षमिति बल नाम निघ.२.६
,, ,, सना (सन)	दे	षणु-दाने
,, ,, वस्यसः	श्रेष्ठगुणों को बसाने वाले	वस-निवासे

पृष्ठ	वैदिक शब्द	अर्थ	निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश
,,	२७ मृध:	हिंसक शत्रु (बाह्य तथा काम क्रोध लोभादि आन्तरिक)	मृध-हिंसायाम् मृध इति संग्राम नाम निघ. २.१७
,,	,, गूर्तिभि:	उद्यमों से	गुरी-उद्यमने
,,	,, ज्योक्	चिरकाल तक	
,	२८ सुम्नम्	सुख	सुम्नम् इति सुखनाम निघ.३.६
,,	,, पीयूषम्	अमृत	
,,	,, ओजसा	सरल भाव से	उब्ज-आर्जवे
,,	,, रातय:	दान	रा-दाने
,,	३० पृतनाषाट्	(काम क्रोध लोभ आदि की) सेना को हराने वाला	पृतना इति संग्राम नाम निघ. २.१७ षह्-अभिभवे
,,	,, भर्ग:	(अज्ञान भयशोक चिन्ता क्लेश आदि को जलाने वाला) तेज	भृजी-भर्जने
,,	३२ जरितॄन्	स्तुति करने वालों को	जरिता इति स्तोतृ नाम निघ. ३.१६ जरते इति अर्चतिकर्मा ३.१४
,,	,, नक्तम्	रात	नक्तेति रात्रि नाम निघ. १.७
,	,, उपस्थसत्	सदा समीप रहने वाला	
,,	,, जामि:	बन्धु	

पृष्ठ	वैदिक शब्द	अर्थ	निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश
,, ,,	वृषा	सुख शान्ति वर्षक	वृषु-सेचने
,, ,,	सूनवः	पुत्र	
,, ,,	अभिचक्ष्यम्	चारों ओर से देखने और कथन करने योग्य	चक्ष-व्यक्तायां वाचि दर्शनेऽपि
,, ,,	तुवंशम्	धर्म अर्थ काम मोक्ष चार पुरुषार्थों की कामना करने वाले को	वश-कान्तौ
,, ,,	यदुम्	प्रयत्नशील	यती-प्रयतने
,, ,,	पस्पशे	स्पर्श करता है-जानता है	स्पश-गतिबाधनयोः
,, ,,	श्रवः	यश	श्रवः-श्रूयत इतिसतः नि०
,, ,,	पौंस्यम्	बल	पौस्यं बलनाम निघ.२.९
,, ,,	सुमन्मा	उत्तम ज्ञान वाला	मन—ज्ञाने
,, ,,	वयः	जीवन-दीर्घायु-अन्न	वयइति अन्ननाम निघ.२.७ वी-गतिव्याप्ति प्रजन कान्त्यसन खादनेषु
,, ,,	सूरयः	विद्वान् स्तोता	सूरिरितिस्तोतृनाम निघ. ३.१६
,, ,,	पदम्	प्राप्तव्य स्वरूप	पद-गतौ
,, ,,	वातः	प्राणस्वरूप-गतिदाता सेवनीय परमेश्वर	वा-गति गन्धनयोः, वात-सुख सेवनयोः गति सुख सेवनेष्वित्यन्ये
,, ,,	महिषम्	महान्	महिष इतिमहन्नाम निघ. ३.३
,, ,,	विष्णोः	सर्वव्यापक परमेश्वर का	विष्लृ-व्याप्तौ

पं० धर्म देव जी विद्या मार्तण्ड रचित कुछ अन्य पुस्तकें

वेदों का यथार्थ स्वरूप— पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से प्रकाशित बृहद्ग्रन्थ ६-५०

वैदिक कर्तव्य शास्त्र–गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय प्रकाशन मन्दिर द्वारा प्रकाशित। १-५०

भारतीय समाजशास्त्र—आर्य साहित्य मण्डल अजमेर द्वारा प्रकाशित ३य संस्करण। २-५०

वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी ८ मसं० ०-७५
अमर धर्मवीर स्वा० श्रद्धानन्द जी १-००
आर्य धर्म निबन्ध माला १-००
म० राजपाल ऐन्ड सन्स काश्मीरी गेट देहली ६ द्वारा प्रकाशित

बौद्धमत और वैदिक धर्म–आर्य समाज दीवानहाल देहली द्वारा प्रकाशित १-५०

स्त्रियों का वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकाण्ड में अधिकार १-२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि ३य संस्करण ०-५०
Maharshi Dayanananda and Satyarth Parkash 2nd Edition 0-50
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई देहली १ द्वारा प्रकाशित।

—※—※—

आनन्द कुटीर ज्वालापुर से प्रकाशित और प्राप्तव्य पुस्तकें

१ **महापुरुषकीर्तनम्**—उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत भाषानुवाद सहित संस्कृत काव्य)

अजिल्द २-००
सजिल्द २-२५

२ **महिलामणिकीर्तनम्**—उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत संस्कृत काव्य भाषानुवाद सहित

अजिल्द २-५०
सजिल्द ३-००

3 Some Psalms of the Sama Veda Samhita-metrically translated by Pandit Dharmadeva Vidya Martand श्री चौ० प्रताप सिंह ट्रस्ट की उदार आर्थिक सहायता से प्रकाशित

4 Mahatma Buddha an-Arya Reformer 2nd Ed.
1-75

दानवीर सेठ जुगल किशोर विरला जी के आर्य धर्म सेवा सङ्घ बिरला लाइन्स सब्जी मन्डी देहली की उदार आर्थिक सहायता से प्रकाशित।

इन में से प्रथम और तृतीय तथा सामसंगीत सुधा की प्रतियां निम्न पते पर भी प्राप्त हो सकती हैं।

चौ० प्रताप सिंह ट्रस्ट ५७ एल मौडल टाऊन
करनाल (हरियाना प्रान्त)